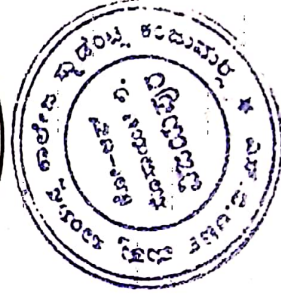


B.L.D.E. Association's

**S. B. Arts & K.C.P. Science College,
VIJAYAPUR- 586 103.**



ASSIGNMENT

For B.A./ B.Sc.^{IInd} Semester
20 19 - 20 20

Name of the Student Shainajabi . G. Nadaf
Roll No. 229 R.C.U. Seat No. A1945314
Subject Hindi (opt)

Assignment No.	Date	Marks Assigned	Marks Obtained	Name and Signature of Teacher	Remarks
1	4/3/20	03	03	Dr. M. B. Patil.	
2					
3					
4					

किरण कविता का सारांश

* जयशंकर प्रसाद :-

जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के गोवर्धन सराय मुहल्ले के प्रतिष्ठित सुधनी साहू वैश्य परिवार में सन 1889 को हुआ। इनके पितामह श्री शिवरत्न साहू उदार दानशील तथा काव्यप्रेमी थे। इनके पिता श्री देविप्रसाद साहू विद्वानों और कलाकारों का आदर्श करते थे। परिवार की परम्परा में ये शिवोपासक रहे। घर पर ही उन्हें संस्कृत, हिन्दी, फारसी और उर्दू की शिक्षा दी गयी। क्वींस कॉलेज में इनका नाम लिखाया गया। बारह वर्ष की अवस्था में इनके पिता को देहान्त हो गया।

नौ वर्ष की अल्प आयु में ही जयशंकर प्रसाद ने कलाधर नाम से एक अवैया की रचना की। पहले ये बुजभाषा में रचना करते रहे बाद में खड़ी बोली को काव्य-रचना का आधार बनाया। सन 1918 ई में चित्राधार नाम से प्रथम संग्रह प्रकाशित हुआ। सन 1918 में इसका कविता संग्रह प्रकाशित हुआ। सन 1937 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने मंगलप्रसाद पारितोषिक से उन्हें सम्मानित किया।

सज्जन, कल्याणी परिणय, राज्यश्री, विशाख, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ इनके नाटक हैं। कंकाल, तितली और इशवती इनके उपन्यास हैं। छाया प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी और इन्द्रजान इनके कहानी संग्रह हैं। काव्यकला और अन्य निबन्ध इनकी निबन्ध रचना हैं।

* अयोगवाहक :-

हिन्दी वर्णमाला में स्वरों और व्यंजनों के बीच दो ऐसी ध्वनियाँ हैं जो न शुद्धतः स्वर हैं और न व्यंजन । ये स्वर व्यंजनों के योग से बनी हैं । ये ध्वनियाँ हैं अ और अः । इन्हें क्रमशः अनुस्वार और विसर्ग कहा जाता है ।

* — * — * — *

→ लिखावर को सुधारो ।